

रुद्रकखलु ल्यत्र कवर्धकलियूगं यन्मृदीय वासुकि रुद्र आर्या
वर्धकं रुद्रकं नयाल दरुध डय द्युदयि १० वागमस्या ४ यश्चिमल
रा धारव नया रुद्रवयार्थ विरुमस्या पूर्वदिशि कभा वस्या दकिन
राग सुदूर्जयारुमिसमान जूतगी दवान् यश्च न यी खगानना ह
वृक विवृया रुस्य रुद्र रुद्र द्युवक तनिधान १० देव पूम्भ रुमोर्ध

अथ काय ॥ ओं नमो भगवते कथं भगवता या पूर्व वाधिसत्त्व
यौवनं हि वाधिसत्त्व भगवति मातापितृ पूर्वगमनस्य ४ सप्त पूर्व
स्य ४ पूषमाविधायकात्मा यत्मा ४ दियं गुरु यत्मा यत्मा
मूकतामध्याययत्मा गकार्थस्य चर्षणाम्बु सन्निकयिष्योक्तता
र्थ ॥ दयिं सुसंकल्पयाम्यहं ॥ ॥ लखकय ॥ ओं नमो भगवते

वर्द्धगकियविष्णु धननाजाय कथं भगवता यार्हक सम्यक् वृद्धाय ॥ न
यथा ॥ ओं ॥ धनशिविष्णु धनशर्वयाय विष्णु धनशुद्धविष्णु
वर्द्धकर्मवर्द्धविष्णु धनस्वाहा ॥ ॥ ओं ॥ अमायाय मिह कुरु नर
वर्द्धकर्मकुरु यत्मा यत्मा ॥ धनकलि ॥ ओं वाधिसत्त्व यौवन
स्वाहा ॥ लख ॥ ओं पूष ॥ महापूष अयनिमिह पूष अयनिमिमाय

यूध्यहानसैला वायं के काविमिस्त्रहा ॥ राथनयिबुझायक धून
काव कृमनवाथयक वाक् ॥ ओं द्विन्द २ स्वधा ॥ ओं द्विन्द २ स्वधा ॥ ऊत
कनयाणुवेयक के नायजूककव ॥ अगर्हसकय के वाक ॥ ओं व
ऊधउगर्हसाहा ॥ वेयकयकस्त्रान वायवाक ॥ ओं वऊवे वावनाय
वऊययंपकिष्ठसाहा ॥ ओं पूकासाय ॥ पू ॥ ओं नत्तस्रवाय ॥ दा

ओं जूमिनाहाय ॥ प ॥ ओं जूमापतिद्विय ॥ उ ॥ ओं मामकिय ॥ पू ॥
ओं वावनिय ॥ ने ॥ ओं यन्ननिय ॥ वा ॥ ओं नावाय ॥ ॐ ॥ वेयस्था
यनायाय ॥ ओं सुप्रतिस्थितवऊसाहा ॥ वेयसलंखनदास्यं स्वधन
मऊ ॥ ओं नमाकगावस्य वे वावनपुरुकडुवाजाय कथागनायाइ
हं नस्यकीवूझाय ॥ कथथा ॥ ओं सुक्क २ ससय २ ॥ क २ दा क २

जसमानुयकवम्वजुनावम्वयखावनिमहाकडनिवात्रम्वनिवकु
लनिर्वानेसर्वकथागताधिष्ठानधिष्ठिरस्वाहाथनवेद्यमकस्व
माहास्नानकसंरावनाभाओंमून२महामूनस्वाहाधूपनिमकुता
स्नानयाककभायनियदिपूजाभाथनलिकुक्षपूषिकापूठका
नकवाकभाजुयकायभाओंनमारुगवकयथाकन्यादिभास्वमवाक

नकुभासनमूयनिलिगांभाबृहधर्मसद्यपू३सूखावतिल्लाकः
स्वपू९स्वायकवाकभाओंस्वस्वागताययमिदमासनमाथकाभाक
गारुवताभाकभाजुकासस्थसर्वदवमादिरिरुगवमांगुधवनीः
कूर्वदुदवानागासूवायकागंधर्वाथमहावगारुनायकायिभावाया
धसर्ववागकयूयंकवृक्षातांगुधवर्षनांजुहाबृह२बृहधर्मकभा

नमः सर्वदुर्गे नित्यविसं (साधनाय सत्त्वा ता वाधियाय रुमानवक
थननिर्य कश्चिदुदीर्घायूषानवानुत्था दक वृक्ष कांकावसुगति
पायन नाना जन्माना नूगता ४ सर्वधर्मा ४ यवस्य नाना गता ४ यविष्ठास
वधर्मा ४ ज्ञानानूय विष्ठा ४ सर्वधर्मा ४ ओं व ऊ वं ध वं ३ ओं सर्ववि
नू व ऊ वं ध वं ३ ॥ ओं निरुव ऊ द दाम रु व गा ध मा म रु व द दयः

मरुवजुधिति एत सर्वसिधिमय य दू दू दू दू दू दू दू ४ रु ग व न्ति
स व ऊ स न य स व ऊ वं धा जू ४ व ऊ मू धि वं ४ ओं सर्ववि नू (साधन
२ सर्वया यानय न य दू ३ या य क र्प न म रु ४ ओं सर्ववि नू सर्वया य वि
(साधन निरु दू दू ४ ओं सर्ववि नू जा क दू दू ४ ओं सर्ववि नू सर्वव व ध विः
(साधन म दू दू दू ४ या य वि स र्जन मं रु ग न क य प्रा या गि ता द दयः

[illegible][illegible]

विद्यारुपिंदथयकवाकं॥ अथ काय॥ अं नमो गवतः यथा कं॥ आदि
मूलरुपिंदथय अथ यथा कं॥ आदि० यिं सं सं घृणा सा द का स न व ना स
मा सा स स्त का द य स र्वा य क व न स हि नां सर्व कृत्ति क व किं ना य दि
घ क दा णा मि स यू य धू य दि य गंध ने व या दि सं यु क्त्वा दि य ग न यू य न
स्व यि ना अ मू ना म ध्या य व र्ष सां व त्स वि क यि दं सं य य क्त्वा मि स्त धा इ॥

ऊ अ ला हा न न अ ला न न य इ त्॥ वि धि व त्पू जा ग स्ना न क सं रा व
ना॥ अं मू न र म हा मू नि य स्वा हा॥ स्ना न या क के ग लं ख ता इ इ इ इ
ध लि ध ल क लि ध लं ख॥ वा के॥ अं नमो गवतः सर्व इ र्ग किं श्या
दि पूर्व व क॥ वा सिं हं॥ अं सर्व वि क्त्वा ऊ ग ध स्वा हा वा य न ला
हा॥ अं सर्व वि ट् रु द न्म ख स्व धा॥ ऊ ऊ म का॥ अं सर्व वि क्त्वा

वस्तु वाससस्व धाया न स्वां भाँ सर्वविदु यज्ञाया न मिनायू कामय
समूह रु न न समय इं मा स्वां भाँ सर्वविदु यज्ञाया न मिनायू कामय
स्वान उरु लस्वान व अस्मां मूसां आदिन मय वा क भाँ सर्वविदु यज्ञाया
मस्त्रिका वैव कर्क रिगं समाह न एतानि सिद्धि सा इतु इत्यं नि
न न सदा ॥ नेव यः समय भाँ सर्वविदु यज्ञाया न मिनायू कामय

जमृ न २ जमृ ना ह व जमृ न संरु व जमृ न विजां न गामि निज
मृ क नाम धाय सर्व कर्म कृ षा कृ य क नी य स्व धा ॥ जमृ न सि भाँ सर्व
विदु यज्ञाया न मिनायू कामय ॥ उ भाँ सर्व कृ व ज ०० ष व स्व धा
॥ उ भाँ सर्वविदु यज्ञाया न मिनायू कामय ॥ क ना भाँ सर्वविदु यज्ञाया
धा विग रु वा य स्व धा ॥ धा न भाँ सर्वविदु यज्ञाया न मिनायू कामय

[illegible][illegible]

कुरुगधनलिविकलपिष्ठययगजययथरुह्यादि॥यचासकूल
जामजुकाययवायवाजासगर्गाविनूपावक्ष्माक्षारकूलनम
रुमादरुनरुमायाडुयनारकिमर्वसखावहितविकलायेंडुन
भुडुकाविवास्तनासवमावनासवधनानाइयनानादिकल
भारासकाधनायविकलमानकाकपिष्ठसययक्ष्मासवभरु

जाम. कुरुगध

238

३

[illegible]

राययः सर्वसत्त्वयाययः सत्त्वहृदयविषयि ॥ १० ॥ नमस्तुः
 धुः उल्लिखाय विनामनिधुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः
 राययिपुत्रकः ॥ ११ ॥ नमस्तुः कीकाष्टिः वायः कुः ॥ १२ ॥ नमस्तुः
 कः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः
 धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः धुः

वायव्य १३ गालां धामाला कथागीतानुश्यादयवदुष्टय
यूयाधूयादियाधुगधादवीनमस्तु १४ गालां धामाला
तावेधुर्जकृशयागस्तुटक १५ गालां धामाला
नमस्तु १६ गालां धामाला दोस्त्रिकायधुवत्ताविधानपाशकांस्तु
दितादोदधधित्वावाधिसत्त्वनमस्तु १७ गालां धामाला धौनूदव

दार्कलाकयालावउर्दिशं गालां धामाला धौनूदव
नमस्तु १८ गालां धामाला धौनूदव
यसिधधमहालक्ष्मीमायुवागारगर्भयद १९ गालां धामाला
विशुद्धसर्वसिद्धिमहालक्ष्मीमायुवागारगर्भयद २० गालां धामाला
यर्क २१ गालां धामाला धौनूदव

सर्वविद्यया वाचं सर्वसत्त्वा सत्त्वसंगहन संगहि ताज्जुद
नावाज्जलायुजा वा सस्वद जावा डयया द्वावावृयि तावाज्ज
नृयिना वा संगिता वा ज्जसंगिता वा नेव संगिता वा नाम संगिता
वा सर्वसत्त्वामया महाम् ज्जमयदाय हि स्थाययि कथा ॥
यून ॥ यम २ महायमयमस्य ववर्ग रुदिवंगन ज्जमकनामश्वा

यसूखावस्था ला कथा डमनग रुदस्वधा रु ॥ थन वाक्कन गुन
जयमान निम्नस्य नगति विद्य ॥ घुन गुन नगति विद्य ॥ स्वका
मस्य महाधा न स्व कत्वा वेन नीतादि रु ॥ स्व कत्वा वेमान सैयन
नैव द्वायन मामिह ॥ तिलया निर्यक यानि प्रयेन देवा सुजानवा
उनीर्ष रुवकानान नैव द्वायन मामिह ॥ दिगु स मय आगवा द्वा

नामयथस्वनांश्चलखनयगववग्मलक्षायवाक॥ओंनांव
लयुगकलायसाहा॥सनाकवविसर्जनयिदअयवेत्यनय।
यलयुसाकोयनयजुकासाकय॥धूयमनउयकवाक॥ओंव
स्व२महावतजत्रमालाविष्णधनदियंगनजुमकनामध्याय
इगकिमार्गविसर्कायसुगनिमार्गदर्शनायओंजावऊदियकी

स्वधारागोवियवाक॥पूर्ववक्तुयावंकथादि॥सनाकवविमर्ज
नयिंधुवुयक॥॥ॐनियिंधुविधानसमाप्त॥॥ॐ॥॥
॥ओंनमाःशीवजसत्तायगोडावऊसत्ताआ५॥रावतागनकुर्व
भमहाकदिव्यायविनाखंनदवतावृद्धधर्मसपदवता४पृथिः
विजाऊददागर्ही४सर्वविप्रभाकिनकायाकिरुनुस्वकिवृत्ताहा







॥ श्री गुरुदेव ॥

कृष्णार्जुनसंवादे